JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

राधे श्याम तिवारी
शोद्यार्थी

सारांश

परिवार का व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी बालक का सम्पूर्ण विकास परिवार के बिना सम्भव नहीं है। न ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास परिवार के बिना सम्भव है। परिवार ही व्यक्ति को उच्च आदर्शो की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर व व्यक्तित्व के विकास के लिए परिवार का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत ही होता है। परिवार का वातावरण ही एक बालक के व्यवहार को प्रारम्भ से ही नियन्त्रित करने, स्नेह व अनुशासन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाता है। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष इस प्रकार है। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया। शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।

ज्ञमल ूवतके– 1. विद्यालय, 2. पर्यावरण जागरूकता, 3. अभिवृत्ति

प्रस्तावना –

वातावरण शब्द पर्यावरण का पर्याय है जो दो शब्दों से मिलकर बना है परि और आवरण। परि का अर्थ चारों और आवरण का अर्थ है ढका हुआ अर्थात वह वातावरण जो बालक के चारों ओर से ढके हुए रहता है। पारिवारिक वातावरण का अर्थ बालक के उस वातावरण से है जो उसे परिवार से मिलता है इस वातावरण से बालक को स्नेह, प्रेम, संस्कार, अच्छी आदतें व बुरी आदतें और परम्परायें भी शामिल हैं। अगर हम परिवार की बात करें तो –'परिवार मानवीय समाज की एक सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। परिवार का व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी बालक का सम्पूर्ण विकास परिवार के बिना सम्भव नहीं है। न ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास परिवार के बिना सम्भव है। परिवार ही व्यक्ति को उच्च आदर्शो की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर व व्यक्तित्व के विकास के लिए परिवार का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत ही होता है। परिवार का वातावरण ही एक बालक के व्यवहार को प्रारम्भ से ही नियन्त्रित करने, स्नेह व अनुशासन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाता है। वातावरण शब्द पर्यावरण का पर्याय है जो दो शब्दों से मिलकर बना है परि और आवरण। परि का अर्थ चारों और आवरण का अर्थ है ढका हुआ अर्थात वह वातावरण जो बालक के चारों ओर से ढके हुए रहता है। पारिवारिक वातावरण का अर्थ बालक के उस वातावरण से है जो उसे परिवार से मिलता है इस वातावरण से बालक को स्नेह, प्रेम, संस्कार, अच्छी आदतें व बुरी आदतें और परम्परायें भी शामिल हैं। अगर हम परिवार की बात करें तो –'परिवार मानवीय समाज की एक सर्वाधिक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। परिवार का व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। किसी भी बालक का सम्पूर्ण विकास परिवार के बिना सम्भव नहीं है। न ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास परिवार के बिना सम्भव है। परिवार ही व्यक्ति

को उच्च आदर्शो की ओर चलने के लिए प्रेरित करता है। किसी भी व्यक्ति के उच्च जीवन स्तर व व्यक्तित्व के विकास के लिए परिवार का होना अति आवश्यक है। क्योंकि बालक का वृद्धावस्था तक विकास पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत ही होता है। परिवार का वातावरण ही एक बालक के व्यवहार को प्रारम्भ से ही नियन्त्रित करने, स्नेह व अनुशासन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाता है। समाज शास्त्रियों ने मानव समाज की आवश्यकताओं को दो समूह में बांटा है। अ– प्राथमिक आवश्यकतायें वह होती हैं जीवन की लिए अति आवश्यक होती हैं। व– द्वितीयक आवश्यकताऐं वह होती हैं जो जीवन यापन के लिए आवश्यक तो नहीं होती परन्तु जीवन में इनका महत्वपूर्ण स्थान होता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

पारिवारिक वातावरण मानव जीवन का सबसे हितेसी साथी है। स्वस्थ्य पारिवारिक वातावरण के बिना किसी भी प्राणी का अस्तित्व नहीं है। अशासकीय और शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों की पारिवारिक स्थिति में अन्तर होता है। शासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले अच्छा वेतन पाते हैं जिसका प्रभाव उनके परिवार पर पड़ता है। किसी भी परिवार के लिए अर्थ का होना अतिआवश्क है। अर्थहीन परिवार का संतुलन बिगड़ जाता है और परिवार टूटने लगते हैं। जबकि जिन परिवारों में अच्छा वेतन आता है उन परिवारों में रिश्ते भी मजबूत होते हैं। अर्थात् कह सकते हैं कि अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों का पारिवारिक सम्बन्ध और वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों के पारिवारिक सम्बन्ध में अन्तर पाया जाता है। जब किसी व्यक्ति का पारिवारिक वातावरण अच्छा नहीं होता है तो उसका प्रभाव उसके व्यवहार व शिक्षण पर पड़ता है। परिवार का वातावरण अच्छा होना शिक्षण की प्रभावशीलता के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। इन सब तथ्यों को जानने के लिए इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त अध्ययन में यह भी देखा जायेगा कि शासकीय और अशासकीय महाविद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों को पारिवारिक वातावरण इनके शिक्षण तथा व्यवहार को कितना प्रभावित करता है। शोध से प्राप्त निष्कर्ष पारिवारीक वातावरण के लिए लाभप्रद होंगे।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण –

निम्नलिखित शोधर्थियों ने पर्यावरण सम्बन्धी विषय पर शोध कार्य किये हैं। जिसमें कलियाठ (1988), मो0 सलीम (1989), चौ0 एस0एस0 (1990), मादराम (1995), अग्रवाल (1995), समलोक (1995), पारीक एम (1996), भट्टाचार्य एन0 (2006) सरला टी0 (2010), जितेन्द्र (2017) आदि प्रमुख हैं।

समस्या कथन –

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों के पारिवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

शोध के उद्देश्य –

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

1ण शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

2ण शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

3ण शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

4ण शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिकल्पनाएं –

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

चर – स्वतन्त्र चर :– विद्यार्थी, आश्रित चरः– पर्यावरण जागरूकता

न्यादर्श –प्रस्तुत लघु शोध हेतु 80 बालकों का चयन किया जायेगा।

शोध उपकरण– इस लघु शोध हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का संकलन– विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया है।

शोध विधि– प्रस्तुत लघु शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सीमांकन –प्रस्तुत शोध को मुरादाबाद जनपद तक सीमित रखा गया है।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या –

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन, व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–1)

पुरूष शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक संख्या
शासकीय महाविद्यालय	40	213.98	22.28	78	7.018
अशासकीय महाविद्यालय	40	219.37	18.88		

व्याख्या –

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 213.98 व 22.28 प्राप्त हुआ है। जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 219.37 व 18.88 प्राप्त हुआ है। स्वतन्त्रांश संख्या 78 पर क्रान्तिक मूल्य का मान 7.018 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है जो सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण की स्थिति में अन्तर नहीं पाया जाता है। हमारी परिकल्पना क्रमाँक एक स्वीकार की जाती है।

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का माध्यमान, मानक विचलन स्वतंत्राश संख्या व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–2)

महिला शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक संख्या
शासकीय महाविद्यालय	20	216.72	21.95	38	6.933
अशासकीय महाविद्यालय	20	215.62	19.65		

व्याख्या–

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 216.72 व 21.95 प्राप्त हुआ है। जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के महिला शिक्षकों

का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 215.62 व 19.65 प्राप्त हुआ है। स्वतन्त्रांश संख्या 78 पर क्रान्तिक मूल्य का मान 6.933 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है जो सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण की स्थिति में अन्तर नहीं पाया जाता है। हमारी परिकल्पना क्रमाँक एक स्वीकार की जाती है।

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन स्वतन्त्रांश संख्या व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या–3)

शहरी शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
शासकीय महाविद्यालय	20	216.30	22.02	38	6.580
अशासकीय महाविद्यालय	20	217.05	19.56		

व्याख्या–

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 216.30 व 22.02 प्राप्त हुआ है। जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के शहरी शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 217.05 व 19.56 प्राप्त हुआ है। स्वतन्त्रांश संख्या 78 पर क्रान्तिक मूल्य का मान 6.580 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है जो सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण की स्थिति में अन्तर नहीं पाया जाता है। हमारी परिकल्पना क्रमाँक एक स्वीकार की जाती है।

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण का मध्यमान, मानक विचलन स्वतंत्रांश संख्या व क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

(तालिका संख्या 4)

ग्रामीण शिक्षक	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रांश संख्या	क्रान्तिक अनुपात
शासकीय महाविद्यालय	20	216.84	23.76	38	7.05
अशासकीय महाविद्यालय	20	219.26	19.94		

व्याख्या –

तालिका से स्पष्ट है कि शासकीय महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 216.84 व 23.76 प्राप्त हुआ है। जबकि अशासकीय महाविद्यालयों के ग्रामीण शिक्षकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 219.26 व 19.94 प्राप्त हुआ है। स्वतन्त्रांश संख्या 78 पर क्रान्तिक मूल्य का मान 7.05 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के दोनों स्तरों से कम है जो सार्थक अन्तर को स्पष्ट नहीं करता है। अर्थात् शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत् ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण की स्थिति में अन्तर नहीं पाया जाता है। हमारी परिकल्पना क्रमाँक एक स्वीकार की जाती है।

शोध निष्कर्ष

1. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।
4. शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों में कार्यरत ग्रामीण शिक्षकों की पारीवारिक वातावरण में सार्थक अन्तर पाया गया।

संदर्भ सूची

राय पारस नाथ (1999) : अनुसंधान विधियाँ, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।

शर्मा आर0ए0 (1998) : शिक्षा अनुसंधान, सूर्या प्रकाशन, मेरठ।

पाण्डे डॉ0 के0 पी0 (2006) : शैक्षिक अनुसंधान विश्व विद्यालय प्रकाशन वाराणसी।

अग्रवाल एम0पी0 (2005) : सांख्यिकी के मूल तत्व, रमेश बुक डिपो, जयपुर

ओड़0 एल0 के (2005) : शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

गुप्ता प्रो0 एस0पी0 (2002) : अनुसंधान संदिर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

रायजादा बी0एस0 (1997) : शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व राज, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

सुखिया एस0पी0 (1998) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा